क्षमावाणी

क्षमा याचना या क्षमा करना दों प्राणियों की सम्मिलित क्रिया नहीं है। यह एकदम व्यक्तिगत चीज है, स्वाधीन क्रिया है। क्षमावाणी एक धार्मिक परिणति, आध्यात्मिक क्रिया है। उसमें पर के सहयोग वा स्वीकृति की आवश्यकता नहीं है। यदि हम क्षमाभाव धारण करना चाहते हैं, तो उसके लिये यह आवश्यक नहीं कि जब कोई हमसे क्षमायाचना करें, तब ही हम क्षमा कर सकें अर्थात् क्षमा धारण कर सकें। अपराधी द्वारा क्षमायाचना नहीं किये जाने पर भी उसे क्षमा किया जा सकता है, यदि ऐसा नहीं होता तो फिर क्षमा धारण करना पराधीन हो जाता।

यदि किसी ने हमसे क्षमायाचना नहीं की, तो उसने स्वयं की मानकषाय का त्याग नहीं किया और यदि हमने उसके द्वारा क्षमायाचना किये बिना ही क्षमा कर दिया तो हमने अपने क्रोधभाव का त्याग कर उसका नहीं, बल्कि अपना ही भला किया है। इसीप्रकार हमारे द्वारा क्षमायाचना करने पर भी यदि कोई क्षमा नहीं करता है तो क्रोध का त्याग न करने से उसका बुरा होगा। हमने तो क्षमायाचना द्वारा मान का त्याग कर, अपने में मार्दवधर्म प्रकट कर ही लिया। उसके द्वारा क्षमा नहीं करने से, क्षमा माँगने से होने वाले लाभ से हम वंचित नहीं रह सकते।

यही कारण है कि आचार्यों ने अन्य जीवों द्वारा क्षमायाचना की प्रतीक्षा किये बिना ही सब जीवों को अपनी ओर से क्षमा करके तथा 'कोई क्षमा करेगा या नहीं' – इस विकल्प के बिना ही सबसे क्षमायाचना करके अपने अन्त:स्थल में उत्तम क्षमा–मार्दवादि धर्मों को धारण कर लिया।

कोई जीव हमसे क्षमा माँगे, चाहे नहीं; हमें क्षमा करे, चाहे नहीं; हम तो अपनी ओर से सबको क्षमा करते हैं और सबसे क्षमा माँगते हैं – इसप्रकार हम तो अब किसी के शत्रु नहीं रहे और न हमारी दृष्टि में कोई हमारा शत्रु रहा। जगत हमें शत्रु माने तो माने, जाने तो जाने; इससे हमको क्या ? और हमारा दूसरे की मान्यता पर अधिकार भी क्या है ? हम तो अपनी मान्यता सुधार कर अपने में जाते हैं, जगत की जगत जाने – ऐसी वीतराग परिणति का नाम ही सच्चे अर्थों में क्षमावाणी है।

– धर्म के दशलक्षण, पृष्ठ : 180–181

वीतराग–विज्ञान

वीतराग–विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग–विज्ञान का , घर–घर होय प्रसार।।

वर्ष : २५ २७८ अंक : २

प्रवचनसार पद्यानुवाद

आचरणप्रज्ञापनाधिकार

इहलोक से निरपेक्ष यति परलोक से प्रतिबद्ध ना।
अर कषायों से रहित युक्ताहार और विहार में।।२२६।।
चार विकथा कषायें अर इन्द्रियों के विषय में।
रत श्रमण निद्रा–नेह में परमत्त होता है श्रमण।।३१।।•
अरे भिक्षा मुनिवरों की ऐसणा से रहित हो।
वे यतीगण ही कहे जाते हैं अनाहारी श्रमण।।२२७।।
तनमात्र ही है परिग्रह ममता नहीं है देह में।
शृंगार बिन शक्ति छुपाये बिना तप में जोड़ते।।२२८।।
इकबार भिक्षाचरण से जैसा मिले मधु–मांस बिन।
अधपेट दिन में लें श्रमण बस यही युक्ताहार है।।२२९।।
पकते हुए अर पके कच्चे माँस में उस जाति के।
सदा ही उत्पन्न होते हैं निगोदी जीव वस।।३२।।•
जो पके कच्चे माँस को खावें छुयें वे नारि–नर।
जीवजन्तु करोड़ों को मारते हैं निरन्तर।।३३।।•
जिनागम अविरुद्ध जो आहार होवे हस्तगत।
नहीं देवे दूसरों को दे तो प्रायश्चित योग्य है।।३४।।•
मूल का न छेद हो इस तरह अपने योग्य ही।
वृद्ध बालक श्रान्त रोगी आचरण धारण करें।।२३०।।

• आचार्य जयसेन की टीका में प्राप्त ३१–३४ गाथायें

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

विषयों की रुचि नहीं होती

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 37 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है –

यथा यथा समायाति संवित्तौ तत्त्वमुत्तमम्।
तथा तथा न रोचन्ते विषया: सुलभा अपि।।

जैसे-जैसे उत्तम तत्त्व अनुभव में आता है, वैसे-वैसे अतिसुलभ विषय भी रुचिकर नहीं लगते।

(गतांक से आगे...)

यहाँ शिष्य का प्रश्न है कि जिसे आत्मा का वेदन हुआ है, उसे किन लक्षणों से जाना जा सकता है ? तथा आत्म-वेदन में उन्नति हो रही है या नहीं, इसको कैसे जाना जा सकता है ?

प्रश्न के उत्तरस्वरूप आचार्यदेव कहते हैं कि जिसे निज आत्मा का वेदन हुआ है; उसे संसार के भोग अच्छे नहीं लगते तथा पुण्योदय से प्राप्त रमणीय विषय-भोगों में भी उसकी रुचि नहीं होती। उसे आत्मानुभव के अलौकिक आनन्द के समक्ष बाह्य जगत की समस्त वस्तुयें तुच्छ भासित होती हैं।

भगवान शान्तिनाथ चक्रवर्ती राजा थे। उन्हें 96 हजार रानियों का उपभोग था; किन्तु वैराग्यभाव प्रगट होते ही वे दीक्षा लेने हेतु निकल पड़े। रानियाँ गला फाड़-फाड़कर रोने लगीं। तब उन रानियों से शान्तिनाथस्वामी कहते हैं कि अरे स्त्रियों ! हमें संसार के भोगों की रुचि तो थी नहीं, थोड़ा-बहुत अस्थिरता संबंधी राग था; अत: संसार में रुके हुये थे; किन्तु अब यह अस्थिरता का राग भी मर चुका है; अत: संसार से कुछ भी संबंध नहीं है।

ज्ञानी कहते हैं कि दुनिया में ज्यादा सुख प्राप्त होने पर अल्प सुख के कारणों में किसी को आदरभाव नहीं वर्तता। घी में तले हुये पकवान मिल जाये तो ज्वार की रोटी कौन खायेगा ? चक्रवर्ती का राज्य मिल जाये तो छोटे-मोटे राज्य को कौन चाहे ? शहर में बड़ा मकान मिल जाये तो गाँव में कौन रहेगा ? उसीप्रकार जिसे आत्मा के स्वरूप का श्रद्धान-ज्ञान और वेदन हो गया हो, उसे बाह्य भोगों में रुचि

कैसे हो सकती है अर्थात् बाह्य विषय-भोग उसके लिये तुच्छ ही हैं।

शास्त्रों में कहा है कि जिसका मन सुख-शांति में लीन हो चुका है, उसे बाह्य भोजनादि में रुचि नहीं होती। अरे ! एकबार शास्त्र बाँचनेमात्र का रस लग जाये तो फिर खाना-पीना आदि कुछ नहीं रुचता। विक्रम संवत् 82 में सबसे पहले हमें मोक्षमार्गप्रकाशक पढ़ने को मिला, तब इसे पढने में इतना आनन्द आता था कि अन्य कोई कार्य करने का विचार भी नहीं आता था।

इस ग्रन्थ में सीधी-सरल हिन्दी भाषा में अलौकिक वस्तुस्वरूप प्रकट किया है; अत: महिमा आती है। शास्त्र पढ़ने में ही इतना आनन्द आता है तो आत्मा के ज्ञान-श्रद्धान और आनन्द की क्या बात करना ? अन्य समस्त विषय तो दु:खरूप, संसार के कारण हैं। एकमात्र आत्मा ही सुखकारी है।

ज्ञानी के भोग निर्जरा का कारण है – ऐसा कहा जाता है। वस्तुत: भोग निर्जरा का कारण नहीं हैं। ज्ञानी जीव की दृष्टि में भोगों के प्रति आदरभाव नहीं है। उसे तो भोग विष के समान भासित होते हैं, अत: दृष्टि के जोर की अपेक्षा से भोग को निर्जरा का कारण कहा है। वास्तव में जितना राग विद्यमान है, वह बंध का ही कारण है।

अपना आत्मा स्वयं के पास है, दूर नहीं; किन्तु अज्ञानदशा में दूर भासित होता है। जैसे ही दृष्टि पलटती है, आत्मा समीप दिखाई देता है। पाँच इन्द्रियों के विषय-भोगों के प्रति ज्ञानी जीव तो अन्तर से ही उदास रहता है।

यहाँ प्रश्न हो सकता है कि जब ज्ञानी विषयों से उदास है तो फिर उसे भोगादि से क्या काम ? उससे कहते हैं कि हे भाई ! विषयों को ज्ञानी भोगता नहीं है; बल्कि जब जड़ की क्रिया होती है, तब उसे मात्र जानता है। अरे, ज्ञानी ही क्या ? अज्ञानी जीव तक जड़ इन्द्रिय-विषयों को नहीं भोग सकता। वह तो केवल जड़ पदार्थों के राग में एकत्व करके सुख-दु:ख मानता है।

जिस माता का युवा पुत्र मर गया हो, उस माता को कैसे चैन पड़ेगा ? न खाने-पीने का मन करता है और न अन्य किसी कार्य में मन लगता है; क्योंकि उसके मन में यह बात बैठ गई है कि अरे ! मेरा पुत्र चला गया। उसीप्रकार ज्ञानी को ज्ञान और राग के बीच भेदज्ञान हो गया है। उसे परद्रव्य और राग में रुचि ही नहीं है।

अहो ! धर्मी जीव तो बार-बार अतीन्द्रिय आनन्द का वेदन-स्मरण करता है, उसे ही भोगता है, फिर अन्य विषयों का उसे कैसे स्मरण रहेगा ? धर्मी जीव ने तो

राग और आत्मा के बीच छैनी मार दी है। 'राग में आत्मा नहीं और आत्मा में राग नहीं' – ऐसे भेदज्ञानपूर्वक जिसे यथार्थ दृष्टि प्रगट हो गई है, उसे बाह्य जगत का समस्त व्यवहार छूट गया है तथा परपदार्थ और रागादि में उसे एकत्वपना भी नहीं है।

निमित्तादिक से लाभ-हानि माननेवाला जीव पराश्रितबुद्धिवाला है। सबकुछ छोड़ने पर भी उसने कुछ नहीं छोड़ा है; वास्तव में तो उसने धर्म ही छोड़ा है। कर्म से विकार होता है, इन्द्रियों से ज्ञान होता है – ऐसी पराश्रितदृष्टि वाले को स्वाश्रितदृष्टि कभी प्रगट नहीं हो सकती।

पूज्यपादस्वामी कहते हैं कि हे वत्स ! जिसप्रकार मछली को गरम रेत ही जला डालती है तो अग्नि की क्या बात कहें ? उसीप्रकार अकषायस्वभावी शांतस्वरूप में निमग्न ज्ञानी को शुभभाव ही दु:खरूप और आकुलतारूप लगते हैं तो अशुभभावों की बात ही क्या करें ? शुभ व अशुभ दोनों ही भाव आकुलतास्वरूप-दु:खरूप हैं, विकार हैं, आस्रव-बंध का कारण हैं। जिसने अबंधस्वरूप भगवान आत्मा का लक्ष्य किया है, उसे बंधभाव की क्या कीमत है ? अर्थात् कुछ भी नहीं।

इसप्रकार जिसे आत्मसंवित्ती अर्थात् आत्मानुभव प्रगट हुआ है, उसे विषयों की रुचि नहीं होती और जिसे विषयों की रुचि होती है, उसे आत्मसंवित्ति नहीं होती। इन्हीं लक्षणों से ज्ञानी-अज्ञानी की पहिचान होती है।

आत्मा में ही सुख है – ऐसा विश्वास होते ही बाह्य विषयों की सुखबुद्धि छूट जाती है, विषयों की रुचि भस्म हो जाती है। जिसे श्रद्धा-ज्ञान में आत्मा की झलक दिखाई देती है, उसे आत्मा की समीपता हो जाती है, फिर विषयों में रुचि कैसे हो सकती है ? अर्थात् नहीं हो सकती।

जिसने आत्म-मिठास का अनुभव ही नहीं किया और कहता है कि मुझे विषयों के प्रति अरुचि है तो उसकी यह बात पूर्णत: झूठी है; क्योंकि अपने स्वभाव की रुचि हुये बिना विषयों की रुचि छूटती नहीं है।

ज्ञानी को जैसे-जैसे विषयों की रुचि घटती जाती है, वैसे-वैसे आत्मसंवित्ति बढ़ती जाती है। यही आत्मसंवित्ति के उन्नति का क्रम है। जैसे-जैसे स्वभाव में एकाग्रता बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे विषयों की आसक्ति घटती जाती है। यही शुद्धि की वृद्धि है – इसप्रकार ज्ञानी की संवित्ति का लक्षण और उसकी वृद्धि का क्रम बताकर आचार्यदेव ने शिष्य के प्रश्नों का जवाब दिया है।

विभाव पर्याय और स्वभाव पर्याय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की 15 वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथायें मूलत: इसप्रकार है ह्न

णरणारयतिरियसुरा पज्जाया ते विहावमिदि भणिदा।
कम्मोपाधिविवज्जियपज्जाया ते सहावमिदि भणिदा ।।15।।

मनुष्य, नारक, तिर्यंच और देवरूप पर्याय विभाव पर्याय कही गई है और कर्मोपाधिरहित पर्याय स्वभाव पर्याय कही गई है।

(गतांक से आगे...)

अहो ! समय-समय में तुझमें परिपूर्णता वर्त रही है। पूर्ण कारण जब देखो, तब तुझमें ही हाजिर है। बाहर में कारण की खोज में जाना पड़े – ऐसा नहीं है। संसारदशा में भी यह कारणपर्याय त्रिकाल वर्त रही है।

पण्डित बनारसीदासजी ने परमार्थ वचनिका में आगम पद्धति और अध्यात्म पद्धति का विवेचन किया है, उसमें यह बात स्पष्ट की है। वहाँ संसार अवस्था में त्रिकालवर्ती चार बोल बतलाये हैं।

आगमरूप कर्म पद्धति के दो प्रकार हैं – द्रव्यरूप और भावरूप।

(1) द्रव्यरूप आगम पद्धति अर्थात् पुद्गल कर्म की पर्याय।

(2) भावरूप आगम पद्धति अर्थात् जीव का विकारी भाव।

अध्यात्मपद्धति अर्थात् शुद्धचेतना पद्धति। इसके भी दो बोल हैं – द्रव्यरूप और भावरूप।

(3) द्रव्यरूप तो जीवत्व परिणाम हैं – वह जीवत्वरूप शुद्धचेतना परिणाम त्रिकाल है।

(4) भावरूप ज्ञान-दर्शनादि अनंत गुण परिणाम हैं। वे ज्ञानदर्शनादि भावरूप शुद्धचेतना परिणाम हैं। वे भी त्रिकाल वर्तते हैं, उनको जानने और मानने में मोक्षमार्ग

आ जाता है।

उपर्युक्त चारों पर्यायें संसार में त्रिकाल वर्तती हैं। प्रथम के दो बोल संसार में है, किन्तु मोक्ष में नहीं । ऊपर जो द्रव्यरूप और भावरूप शुद्धचेतना पद्धति कही है, उसका समावेश इसमें हो जाता है। द्रव्य की समय-समय की अखण्ड परिणति त्रिकाल वर्तती है। भगवान चैतन्य अपनी कारणशुद्धपरिणति में त्रिकाल विराज रहा है, वह परिपूर्ण है, उसकी परिणति में कभी अधूरापन नहीं है। ऐसी पूर्णता को माने तो पूर्ण बन जाये। अधूरा मानेगा वह अधूरा रहेगा। सिद्धपर्याय प्रकट हो जाये तब भी शुद्धकारणपरिणति तो ज्यों की त्यों पूर्ण ही रहती है - ऐसी कारणशुद्ध पर्याय है।

चैतन्य भगवान के साथ उसकी तैयार सुसज्जित हथियार जैसी कारणशुद्धपर्याय त्रिकाल पूर्ण पड़ी है, उसको देखने मात्र से संसार का नाश होकर मोक्ष प्रकट होता है।

ऐसा पूर्ण वस्तुस्वरूप है। ऐसी वस्तु तो गाने गाये जाने योग्य है। एकरूप धारावाही सपाटीपने चैतन्यसमुद्र विराज रहा है, यही निश्चय से पूज्य है। इसके आधार से प्रकट होनेवाला केवलज्ञान फलरूप कार्यपर्याय है। यह कारणशुद्धपर्याय फलरूप नहीं है, इसके आश्रय से जो कार्य शुद्धपर्याय प्रकट होती है, वह फलरूप है। उसका वर्णन अब करते हैं।

सादि-अनंत, अमूर्त्त, अतीन्द्रिय स्वभाववाला शुद्धसद्भूतव्यवहार से केवलज्ञान-केवलदर्शन-केवलसुख-केवलशक्तियुक्त फलरूप अनन्तचतुष्टय के साथवाली अर्थात् अनन्तचतुष्टय के साथ तन्मयपने रहनेवाली परमोत्कृष्ट क्षायिकभाव की शुद्ध परिणति ही कार्यशुद्धपर्याय है।

(1) कारणशुद्धपर्याय अनादि-अनंत है, पर कार्यशुद्धपर्याय सादि-अनंत है।

(2) कारणशुद्धपर्याय अमूर्त्त है, उसीप्रकार कार्यशुद्धपर्याय भी अमूर्त्त है।

(3) कारणशुद्धपर्याय अतीन्द्रिय है, उसीप्रकार कार्यशुद्धपर्याय भी अतीन्द्रिय है।

(4) कारणशुद्धपर्याय को त्रिकाल कर्म की उपाधि नहीं; और इस कार्यशुद्धपर्याय को प्रकट होने के बाद कर्म की उपाधि नहीं।

(5) कारणशुद्धपर्याय सहज शुद्धनिश्चय का विषय है और यह कार्य शुद्धपर्याय सद्भूतव्यवहार का विषय है।

(6) कारणशुद्धपर्याय त्रिकाल सहजज्ञान, दर्शन, चारित्र और सुख ऐसे स्वभाव चतुष्टय के साथ वर्तती है और यह कार्यशुद्धपर्याय केवलज्ञान-दर्शन, सुख और वीर्य ऐसे चतुष्टय के साथ अभेद वर्तती क्षायिकभावरूप उत्कृष्ट परिणति है। (यहाँ कार्य चतुष्टय में वीर्य को लिया है और कारणचतुष्टय में सुख को लिया है)

अहो ! जंगल में बैठे-बैठे मुनियों ने सिद्धसदृश अपने आत्मा के साथ आनंद भोगते हुये, उसे बाहर प्रकट किया है। त्रिकाल शुद्धस्वभावरूप चैतन्य भगवान राजा और उसकी कारणशुद्धपरिणतिरूप रानी - यह दोनों त्रिकाल साथ-साथ विराजमान हैं। प्रवचनसार के चरणानुयोग अधिकार में शुद्धपरिणतिरूपी स्त्री कही है, वह तो प्रकट हुई निर्मल पर्याय को कहा है; परन्तु यह कारणशुद्धपरिणतिरूपी स्त्री तो त्रिकाल ही चैतन्य के साथ-साथ है। इसी में से केवलज्ञानादि कार्य प्रकट होते हैं।

जो स्वभाव अनन्तचतुष्टय प्रकट हुआ उसके साथ सभी गुणों की परिणतियों को क्षायिकभाव में अभेदपने लेकर उनको शुद्धकार्यपर्याय कहा है। जो त्रिकाली अनन्तस्वभाव चतुष्टय कहा, उसमें भी प्रत्येक गुण की सहज पर्याय समाविष्ट है अर्थात् साथ ही है; परन्तु कारणशुद्धपर्याय में तो सभी अभेद हो जाता है अर्थात् उसमें तो सभी गुणों की त्रिकाली शुद्धपरिणति आ जाती है।

इसप्रकार यहाँ स्वभाव पर्याय में कारणशुद्धपर्याय और कार्यशुद्धपर्याय ऐसे दो भेद कहे हैं। उसकी व्याख्या पूर्ण हुई। **(क्रमशः)**

वह घर धन्य है

अरे भाई! तुझे आत्मा के तो दर्शन करना नहीं आता और आत्मा के स्वरूप को देखने हेतु दर्पण के समान जिनेन्द्रदेव के दर्शन भी तू नहीं करता तो तू कहाँ जायेगा? भाई ! जिनेन्द्र भगवान के दर्शन-पूजन भी न करे और अपने को जैन कहलावे - ये तेरा जैनपना कैसा? जिस घर में प्रतिदिन भक्तिपूर्वक देव-गुरु के दर्शन-पूजन होते हैं, मुनिवरों आदि धर्मात्माओं को आदरपूर्वक दान दिया जाता है; वह घर धन्य है, इसके बिना घर तो श्मशानतुल्य है। अरे! वीतरागी सन्त अधिक क्या कहें ? ऐसे धर्मरहित गृहस्थाश्रम को तो हे भाई! समुद्र के गहरे पानी में तिलाञ्जलि दे देना, नहीं तो यह तुझे डुबो देगा। **- श्रावक धर्मप्रकाश, पृष्ठ 92**

छहढाला प्रवचन

अपना हित चाहनेवालों..सुनो

ताहि सुनो भवि मन थिर आन, जो चाहो अपनो कल्याण।
मोह महामद पियो अनादि, भूल आप को भरमत वादि ।।२।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान दौलतरामजीकृत छहढाला पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

अब यहाँ इस दूसरे छन्द में शिष्य से गुरु कहते हैं कि हे भव्य ! आत्मकल्याण के लिए तू इस उपदेश को सावधान होकर स्थिरचित्त से श्रवण कर। अहो, वीतरागमार्गी दिगम्बर संत-मुनि-गुरुओं ने जीवों के हित के लिए वीतराग-विज्ञान का उपदेश दिया है, उसे हे भव्यजीवों ! तुम प्रेम से सुनो ।

यदि तुम अपना हित चाहते हो तो श्रीगुरु के इस हितोपदेश को मन स्थिर करके सुनो। 'हे भव्यजीवों ! हे मोक्ष के लायक जीवों ! हे अपने हित के चाहने वालों !' - ऐसा उत्तम सम्बोधन करके श्री गुरु अनुरोध करते हैं कि वीतराग-विज्ञान का यह उपदेश तुम ध्यानपूर्वक सुनो; दुःख से छूटने के लिए और मोक्षसुख पाने के लिए यह उपदेश उपयोग लगाकर सुनो। इससे अवश्य तुम्हारा हित होगा। अन्य विषयों से लक्ष्य हटाकर अपने हित की यह बात प्रेम से - उत्साह से सुनो।

श्री गुणधर आचार्यदेव ने **कषायप्राभृत** की १० वीं गाथा में **सुण** शब्द रखा है; उसका अर्थ करते हुए **जयधवला** टीका में श्री वीरसेनस्वामी लिखते हैं कि - 'शिष्य को सावधान करने के लिए गाथा सूत्र में जो **सुनो** पद कहा है, वह **'नासमझ शिष्य को व्याख्यान करना निरर्थक है'** - यह बतलाने के लिए कहा है।' जिनको समझने की दरकार ही नहीं, उन जीवों के लिए उपदेश नहीं दिया जाता; अपितु समझने की तमन्नावालों को कहते हैं कि तुम सुनो। जैसे पानी मँगाना हो तो उसके लिए घर के गाय-भैंस आदि पशु को नहीं कहा जाता कि तुम जल लाओ; क्योंकि उसमें ऐसी शक्ति नहीं है, किन्तु समझदार आठ वर्ष के बालक को जल लाने को कहने से वह समझ लेता

है; वैसे ही यहाँ आत्मा का स्वरूप समझने की जिनमें ताकत है, जिनको जिज्ञासा हुई है - ऐसे जीवों के लिए सन्तों उसकी बात सुनाते हैं एवं कहते हैं कि हे भव्य ! 'सुण' अर्थात् जो भाव हम कहते हैं, उसे तू लक्ष्य में ले। तब ही सच्चा श्रवण कहलाता है, जब वह भावों को समझे।

यहाँ भी कहते हैं कि **सुनो भवि मन थिर आन।** तुम्हारे हित की बात सुनो ! हे भाई ! दुःख से छूटने की एवं सुख पाने की ऐसी तेरे हित की यह बात हम तुझे सुनाते हैं, इसको तेरे हित के लिए सावधान होकर सुन ! दूसरी बात व दूसरा विकल्प छोड़ के वीतराग-विज्ञान की यह बात लक्ष्यपूर्वक सुन ! संसार का रस छोड़ के इस चैतन्य के वीतराग-विज्ञान में तत्पर हो !

देखो तो सही, सुननेवाले श्रोताओं के प्रति कितना अनुग्रह किया है ! अनुरोध करते हैं कि अरे जीवों ! यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो, सुख या मोक्ष चाहते हो तो उसके लिए हमारे पास यह वीतराग-विज्ञान का उपदेश है, इसे तुम ध्यानपूर्वक सुनो ! इसके अतिरिक्त संसार में धन वगैरह कैसे मिले या रोगादिक कैसे मिटे ? उसका उपदेश हमारे पास नहीं है; राग तो दुःख है, उसका पोषक उपदेश हमारे पास नहीं है; हमारे पास तो सुख के पोषक वीतराग-विज्ञान का ही उपदेश है। इसकी जिसे चाहना हो, वे सुनो।

मात्र **सुनो** ऐसा ही नहीं कहा; अपितु स्थिरचित्त होकर सुनो और हित के अभिलाषी होकर सुनो कि अहो ! यह मेरे हित की कोई अपूर्व बात है। बैठे हो श्रवण करने को और मन को जहाँ-तहाँ भ्रमता हो - ऐसे जीव को श्रवण का लाभ कैसे होगा ? समयसार में कहा है कि दूसरा निष्प्रयोजन कोलाहल छोड़कर, सब विकल्प को छोड़कर एक अपने चैतन्यस्वरूप के अनुभव का ही अंतर में अभ्यास करे तो शीघ्र ही आत्मानुभव होगा। कितने समय में होगा? तो कहते हैं कि अधिक से अधिक छह मास में होगा; किसी को इससे भी अल्पकाल में हो सकता है।

अब यह दिखाते हैं कि संसार में अभी तक जीव ने क्या किया ? और वह दुःखी क्यों हुआ ? - **मोह महा मद पियो अनादि भूल आपको भरमत वादि।** देखो, यहाँ दुःख का मूल कारण दिखलाकर बाद में उसको दूर करने का उपाय

कहेंगे। **भूल आपको** अर्थात् स्वयं अपनी आत्मा को भूल करके अनादि से जीव संसारभ्रमण कर रहा है। मिथ्यात्वरूपी महामद पिया है; अतः अपने आप को भूल के जीव संसार में दुःखी हो रहा है। श्रीमद् राजचन्द्रजी ने कहा है कि **निज स्वरूप समझे बिना, पाये दुःख अनन्त।** जीव अपनी भूल से ही दुःखी है; भूल भी इतनी कि स्वयं अपने को ही भूल गया और पर को अपना माना। यह कोई छोटी-सी भूल नहीं; अपितु सबसे बड़ी भूल है। अपनी ऐसी महान भूल के कारण भान रहित होकर जीव चारों गतियों में घूम रहा है। ऐसा नहीं कि किसी दूसरे ने उसको दुःखी किया या कर्मों ने उसको रुलाया। सीधी सादी बात यह है कि जीव स्वयं निजस्वरूप को भूलकर अपनी ही भूल से रुला व दुःखी हुआ; जब सच्ची समझ के द्वारा वह अपनी भूल मेटे, तब उसका दुःख मिटे। अन्य किसी उपाय से दुःख नहीं मिट सकता। अतः मिथ्यात्व को दूर करना व सम्यक्त्व को प्रगट करना - यही सभी सन्तों की पहली सीख है।

मोक्षमार्ग प्रकाशक में कहा कि अज्ञानी जीव बाहरी सामग्री को दूर करने और बनाये रखने के उपाय द्वारा दुःख मेटना व सुखी होना चाहते हैं; किन्तु ये सब उपाय झूठे हैं। तो सच्चा उपाय क्या है? जब सम्यग्दर्शनादि से भ्रम दूर हो, तब बाह्य सामग्री से सुख-दुःख न दिखे और अपने परिणाम से ही सुख-दुःख दिखे। यथार्थ विचार के अभ्यास से उस सामग्री के निमित्त से सुखी-दुःखी न हो - ऐसा साधन करें और सम्यग्दर्शनादि की ही भावना से मोह मन्द होने पर ऐसी दशा हो जाये कि अनेक कारणों के मिलने पर भी इस जीव को उनमें सुख-दुःख का आभास न हो; इसप्रकार शांत रसरूप निराकुल होकर सच्चे सुख का अनुभव करे, तब ही सर्व दुःख मिटकर सुखी होवे। अतः यह सम्यग्दर्शनादि ही सुखी होने का सच्चा उपाय है। **(क्रमशः)**

धर्म तो आत्मा में प्रकट होता है, तिथि में नहीं; किन्तु जिस तिथि में आत्मा में क्षमादिरूप वीतरागी शांति प्रकट होती है, वही तिथि पर्व कही जाने लगती है। धर्म का आधार तिथि नहीं आत्मा है। **-धर्म के दसलक्षण,पृष्ठ-6**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : हमारी काललब्धि नहीं पकी - इसलिये सम्यग्दर्शन नहीं होता है न ?

उत्तर : नहीं, नहीं, ऐसा नहीं है। तुम्हारा पुरुषार्थ नहीं है; इसलिये सम्यग्दर्शन नहीं होता है। काललब्धि की भाषा (चर्चा) सुनकर धारणा कर ले और ऐसा बोले तो यह नहीं चलेगा। भगवान ने देखा होगा, तब सम्यग्दर्शन होगा - ऐसी धारणा से भी काम नहीं चलेगा। भगवान ने जो देखा है, उसकी प्रतीति माने उसका यथार्थ ज्ञान करे, यथार्थ निर्णय करे तो काम होगा। जब दृष्टि द्रव्यस्वभाव के ऊपर होती है तब उसकी काललब्धि भी पक गई है। पर के कार्य में तो उलटा पुरुषार्थ बराबर करता है और स्वयं के कार्य में काललब्धि का बहाना निकालकर पुरुषार्थ नहीं करता तो सम्यग्दर्शन कहाँ से होगा ?

प्रश्न : आप कहते हैं कि अकस्मात् कुछ नहीं होता; अत: ज्ञानी नि:शंक और निर्भय है; किन्तु समाचार-पत्र में तो अकस्मात् दुर्घटना के बहुत समाचार आते हैं।

उत्तर : जगत में अकस्मात् कुछ होता ही नहीं है। जिसद्रव्य की जो पर्याय जिसकाल में होना हो, वही होती है। देह छूटने का काल जिसक्षेत्र और जिसनिमित्त से हो, उसीप्रकार देह छूटती है। उलटा-सीधा या अकस्मात् किसी पदार्थ का परिणमन नहीं होता। सब परिणमन व्यवस्थित ही होता है।

प्रश्न : धर्म का मूल सर्वज्ञ है, उस सर्वज्ञ को माना - ऐसा कब कहा जाये ?

उत्तर : सर्वज्ञ द्रव्य की तीनकाल की पर्यायों को जानते हैं और वे पर्यायें जिससमय होनेवाली है, उसीसमय क्रमबद्ध होती है। क्रम तोड़कर नहीं होती है - ऐसा जब जानेगा तभी सर्वज्ञ को माना - ऐसा श्रद्धान किया जायेगा।

समाचार दर्शन -

लंदन (यू.के.) में ऐतिहासिक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न

लंदन : पश्चिमी देश यू.के. की राजधानी लंदन के श्री कुचलेवा पटेल स्पोर्ट्स एण्ड कम्यूनिटि हॉल में श्री दिगम्बर जैन एसोसिएशन लंदन के तत्त्वावधान में शुक्रवार, दिनांक 4 अगस्त से बुधवार, 9 अगस्त, 2006 तक श्री महावीरस्वामी जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

त्रैलोक्य आनंदकारी इस महा महोत्सव में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रासंगिक मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, पण्डित विमलचन्दजी झांझरी उज्जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. हेमन्त ए. गाँधी सोनगढ़, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. किरीट पी. गोसलिया फिनिक्स-अमेरिका के प्रवचनों का लाभ मिला।

महोत्सव की सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि **प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना** तथा सह-प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. हेमन्तभाई गांधी सोनगढ़, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित संजयकुमारजी शास्त्री अलीगढ़ द्वारा सम्पन्न कराई गई। सम्पूर्ण प्रतिष्ठा विधि का निर्देशन पण्डित अशोककुमारजी लुहाड़िया अलीगढ़ एवं कार्यक्रमों का निर्देशन श्री पवनकुमारजी जैन अलीगढ़ ने किया।

लंदन की धरा पर बने विशाल ऐतिहासिक भव्य दिगम्बर जिनमंदिर में शासन नायक अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीरस्वामी की धातुमय, भगवान महावीरस्वामी की 61 इंच उन्नत पद्मासन धवल पाषाणयुक्त मनोहारी एवं भगवान पार्श्वनाथ की मनोज्ञ प्रतिमायें पंचकल्याणक प्रतिष्ठा पूर्वक विराजमान की गईं। इसके अतिरिक्त जिनवाणी माता एवं पूज्य आचार्यों के साथ-साथ गुरुदेवश्री कानजीस्वामी आदि ज्ञानी धर्मात्माओं के चित्रपट भी स्थापित किये गये।

जन्म कल्याणक के अवसर पर विशाल कांच का पालना तथा 16 फीट ऊँचा ऐरावत हाथी विशेष आकर्षण का केन्द्र रहा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भगवान महावीर के जीवन पर आधारित लघु नाटिका, मंगलायतन द्वारा प्रस्तुत 'महारानी चेलना द्वारा धर्मप्रभावना' तथा लंदन मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रस्तुत 'भरत-बाहुबली संवाद' प्रमुख थे।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों का निर्देशन पं.संजयजी शास्त्री एवं श्रीमती वीणा जैन देहरादून ने किया।

महोत्सव को सफल बनाने में श्री दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट सोनगढ़, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर, श्री कहान-राज सर्वोदय ट्रस्ट मुम्बई, श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल नैरोबी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली, श्री कुन्दकुन्द परमागम मंदिर ट्रस्ट सोनागिरि, आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, श्री कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन, श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट भावनगर, चैतन्यधाम-अहमदाबाद, श्री जैन स्वाध्याय मंदिर सोनगढ़-अमेरिका आदि संस्थाओं का विशेष सक्रिय सहयोग रहा। **(शेष पृष्ठ-32 पर...)**

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल विद्वत्परिषद् के नए अध्यक्ष

जयपुर (राज.) : प्रातःस्मरणीय पूज्य गणेशप्रसादजी वर्णी द्वारा स्थापित श्री अखिल भारतवर्षीय दि. जैन विद्वत्परिषद् का 21वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन जयपुर में 30 जुलाई को डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन के प्रथम सत्र में निवर्तमान राष्ट्रीय कार्यकारिणी एवं साधारण सभा की बैठक में चुनाव अधिकारी श्री अनूपचन्दजी एडवोकेट, फिरोजाबाद ने सर्व सम्मति से डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के अध्यक्ष पद पर चुने जाने की घोषणा की। सभी ने करतल ध्वनि से नवनिर्वाचित अध्यक्ष का स्वागत किया। इस अवसर पर नई कार्यकारिणी का गठन हुआ।

द्वितीय सत्र में सम्पन्न हुई बैठक में नई कार्यकारिणी के सदस्यों ने पदाधिकारियों का चयन किया। नवीन कार्यकारिणी का गठन निम्न प्रकार किया गया -

अध्यक्ष : डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल जयपुर, **कार्याध्यक्ष:** डॉ. सुदर्शनलाल जैन वाराणसी, **उपाध्यक्ष :** पं. विमलकुमारजी सोंरया टीकमगढ़, **महामंत्री :** डॉ. सत्यप्रकाश जैन दिल्ली, **मंत्री :** डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल अमलाई, **संगठन मंत्री :** श्री अनूपचन्द जैन एडवोकेट फिरोजाबाद, **प्रचार व प्रकाशन मंत्री :** श्री अखिल बंसल जयपुर, **कोषाध्यक्ष :** डॉ. अशोक गोयल शास्त्री दिल्ली, **पुरस्कार समिति संयोजन :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल जयपुर ।

कार्यकारिणी सदस्य : ब्र. यशपाल जैन जयपुर, डॉ. एस.पी. पाटिल सांगली, डॉ. नन्दलाल जैन रीवा, डॉ. ऋषभचन्द फौजदार वैशाली (बिहार), डॉ. लालचन्द जैन भुवनेश्वर (उड़ीसा), डॉ. पी.सी. जैन जयपुर, डॉ. उदयचन्द जैन उदयपुर, डॉ. बी.एल. सेठी झुंझुनूं, डॉ. प्रेमचन्द रांवका जयपुर, डॉ. कमलेश जैन जयपुर, पण्डित शान्तिकुमार पाटील जयपुर, श्री सतीश जैन (आकाशवाणी)दिल्ली, पं. राजकुमार शास्त्री बाँसवाड़ा ।

विशेष आमंत्रित सदस्य : डॉ. जीवन्धर होसपेटे बैंगलौर, डॉ. पी.आर. जोडहट्टीधारवाड (कर्ना.), पं. रतनचन्द कोटी इण्डी (महा.), श्री मनोहर मारवडकर नागपुर, श्री मिलापचन्द डण्डिया जयपुर, डॉ. निर्मला सांघी जयपुर ।

अधिवेशन का शुभारंभ श्री हीरालालजी बोहरा ने मंगलाचरण द्वारा किया। मुख्य वक्ताओं में सर्वश्री पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, डॉ. सुदर्शनलाल जैन, डॉ. राजेन्द्रकुमार बंसल, डॉ. सत्यप्रकाश जैन तथा डॉ. ऋषभचन्द फौजदार आदि प्रमुख थे। डॉ. भारिल्ल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में नियमित स्वाध्याय एवं सदाचार युक्त जीवन जीने की प्रेरणा देते हुए भगवान महावीर द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया।

अधिवेशन में दिल्ली के पूर्व प्राचार्य श्री कुन्दनलाल जैन को उनकी अनुपस्थिति में गणेशप्रसाद वर्णी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। पुरस्कार में 5,000 रुपये नगद, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, शॉल एवं श्रीफल भेंट किया गया। पुरस्कार उनके पुत्र श्री राजेश जैन ने ग्रहण किया। ध्यान रहे यह पुरस्कार डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल चेरिटेबल ट्रस्ट मुम्बई के सहयोग से विद्वत्परिषद द्वारा दिया जाता है। इस अवसर पर समन्वयवाणी जिनागम शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित डॉ. राजेन्द्र बंसल की कृति 'अष्टपाहुड : एक अध्ययन' का विमोचन किया गया।

अधिवेशन में अनेक प्रस्ताव पारित किए गए तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। सभा का संचालन श्री अखिल बंसल ने किया।

२९ वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 23 जुलाई से 1 अगस्त, 06 तक आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

इस 29 वें शिविर का उद्घाटन समारोह दिनांक 23 जुलाई, 06 को हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री विमलकुमारजी जैन, नीरु केमिकल्स दिल्ली ने की। इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी आदि विद्वान एवं विशिष्ट अतिथि उपस्थित थे।

शिविर का उद्घाटन श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा ने तथा शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी जैन (ओसवाल इण्डस्ट्रीज) जयपुर द्वारा किया गया। ध्वजारोहण श्री नरेशकुमारजी मगनलालजी दोशी, कोचीन द्वारा किया गया।

मंचासीन उपरोक्त समस्त अतिथियों का तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री सुमनभाई दोशी राजकोट एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर ने तिलक लगाकर, माल्यार्पण से स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री ने किया।

प्रतिदिन आध्या. सत्पुरुष गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के टेप व सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा के नियमसार, डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के समयसार एवं डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं समयसार पर मार्मिक प्रवचन हुये। पण्डित अनिलजी भिण्ड के प्रवचन का लाभ भी मिला।

शिविर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर द्वारा सम्यक्त्व सन्मुख मिथ्यादृष्टि प्रकरण, ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद द्वारा छहढाला, ब्र. यशपालजी जैन बेलगांव द्वारा मिश्रभाव, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा चार अभाव, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन द्वारा 47 शक्तियाँ, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा परमभाव प्रकाशक नयचक्र, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री रहली द्वारा तत्त्वार्थसूत्र विषय पर विशेष कक्षाये संचालित की गई।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. श्री राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी व सुपुत्र श्री अशोक पाटनी कोलकाता, श्री लखमीचन्दजी शिखरचन्दजी जैन, विदिशा, डॉ. अरविन्दभाई दोशी गोंडल एवं श्री चिद्रूप-दिलीप शाह मुम्बई थे तथा श्री सिद्ध परमेष्ठी **विधान के आयोजनकर्त्ता** श्री बाबूलालजी सुखलालजी पंचोली थांदला, श्री सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम, श्री गोपीलाल बाबूलालजी जैन कुम्भराज, श्री सरदारमलजी बैरसिया एवं श्री अनिलजी जैन हिसार थे।

30 जुलाई को श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की सलाहकार समिति के अधिवेशन की अध्यक्षता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' ने की। उद्घाटन श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी किशनगढ़ ने किया।

इस शिविर में महाविद्यालय के पूर्व स्नातक जो डॉक्टरेट (पीएच. डी.) की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं, उनके दोपहर एवं रात्रि में उनके द्वारा किये गये शोध विषय पर ही व्याख्यान हुए, जिसमें डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर, डॉ. योगेशकुमारजी जैन अलीगंज, डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, डॉ. सुदीपकुमारजी दिल्ली, डॉ. राकेशजी जैन अलीगढ का लाभ मिला।

दशलक्षण महापर्व पर धर्मप्रभावना हेतु कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। 28 अगस्त 2006 से प्रारम्भ हो रहे इस महापर्व हेतु दिनांक 12 अगस्त 2006 तक हमारे पास 508 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण आ रहे हैं।

दिनांक 11 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 476 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 307 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक एवं वर्तमान छात्र विद्वान ही जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है।

विशिष्ट विद्वान - 1.कोटा : बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, **2.इन्दौर (साधनानगर) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, **3.अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, **4.इन्दौर (माणक चौक):** पण्डित पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, **5.रूकडी :** ब्र. यशपालजी जैन जयपुर, **6.राजकोट :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, **7.भोपाल (चौक) :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, **8.अलवर :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, **9.हिंगोली :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना, **10.कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, **11.बीना :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना, **12.मलकापुर :** ब्र. संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, **13. दुर्ग :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, **14. जबलपुर :** पण्डित कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल **15.बैंगलोर :** पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, **16.विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, **17. जबलपुर :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, **18. अशोकनगर :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, **19. इन्दौर (साधना नगर) :** पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, **20.अलीगढ़ :** पण्डित अशोकजी लुहाडिया, **21.मंगलायतन :** पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर।

विदेश - 1.नैरोबी (अफ्रीका) : पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद, **2.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, **3.वाशिंग्टन (अमेरिका)** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा मुम्बई, **4.बैंकाक (थाईलैण्ड) :** पण्डित भरतभाई शाह मुम्बई, **5.ह्यूस्टन :** पं. विपिनजी जैन मुम्बई, **6.लंदन :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री राजकोट, **7. शिकागो :** विदुषी अनुप्रेक्षा जैन मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त - 1.विदिशा (स्टेशन) : पं.चन्दुभाईजी जैन फतेपुर, **2.भोपाल (कोहेफिजा)** : ब्र. नन्हेलालजी सागर, **3.भिण्ड (देवनगर) :** पं.महेशचन्दजी जैन ग्वालियर, **4.उज्जैन :** पं.धनसिंहजी पिड़ावा, **5.गुना (मुमुक्षु मण्डल) :** विदुषी आशाजी मलकापुर, **6. इन्दौर (न्यू पलासिया)** : ब्र. कैलाशचन्दजी 'अचल' ललितपुर, **7.अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. नेमीचन्दजी ग्वालियर, **8-9.सागर (मु. मण्डल) :** पं. पद्मकुमारजी अजमेरा रतलाम एवं पं. सन्मतिजी शास्त्री पिड़ावा, **10.टीकमगढ :** पं. श्रेणिकजी जैन जबलपुर, **11-12.छिन्दवाडा :** पं. महेन्द्रजी शास्त्री भिण्ड एवं पं. ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, **13. करेली :** पं.शिखरचन्दजी जैन विदिशा, **14.**

ग्वालियर (फालका बाजार): पं. अरूणजी मोदी सागर, 15.**खनियांधाना :** पं. सुबोधजी सिंघई सिवनी, 16.**भिण्ड (परमागम) :** पं.सुदीपजी बीना, 17.**इन्दौर (लश्करी मन्दिर) :** पं. दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, 18.**इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पं. निर्मलजी जैन सागर, 19.**सिवनी :** पं.सुरेन्द्रजी 'पंकज' छिन्दवाड़ा, 20.**बावनगजा :**विदुषी राजकुमारी जैन जयपुर, 21.**भोपाल (पिपलानी) :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, 22.**इन्दौर (नरसिंगपुरा) :** पं. सतीशजी कासलीवाल महिदपुर, 23.**इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.विमलजी जैन अशोकनगर, 24.**रतलाम (चांदनी चौक) :** पं. संजयजी सेठी जयपुर, 25–26.**खुरई :** पं.रमेशचन्दजी 'दाऊ' जयपुर एवं विदुषी कु. स्वाती जैन जयपुर, 27.**सिद्धायतन (द्रोणगिरि):** पं. राजुभाईजी कानपुर, 28.**आरोन :** पं. सुरेशचन्दजी सिंघई 'इन्जि.' भोपाल, 29.**गौरझामर :** पं. निलेशजी जैन जबलपुर, 30.**सागर (मकरोनिया) :** पं.कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर, 31.**लुकवासा :** पं. रविकुमारजी जैन ललितपुर, 32–33.**मौ :** पं.सतीशचन्दजी जैन पिपरई एवं पं. राजेन्द्रजी जैन पिपरई, 34.**चन्देरी :** पं. मनोजजी जैन जबलपुर, 35.**बड़नगर :** पं. अनिलकुमारजी पाटोदी बड़नगर, 36.**मंडला :** पं.धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 37–38.**कोलारस :** पं.अजितजी जैन फिरोजाबाद एवं पं.सुकुमालजी शास्त्री लुकवासा, 39.**राघौगढ़ :** पं. रूपचन्दजी जैन बण्डा, 40.**केसली :** पं. नरेन्द्रकुमारजी जैन जबलपुर, 41. **भोपाल (कस्तूरबानगर) :** पं.जीवनजी शास्त्री घुवारा, 42.**दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, 43.**बाकल :** पं.शिखरचन्दजी जैन सिवनी, 44.**जगदलपुर :** पं. महेन्द्रजी शास्त्री खनियांधाना, 45.**जबेरा :** पं.नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, 46.**ग्वालियर (माधोगंज) :** पं. अभयकुमारजी जैन बदरवास, 47.**लुहारदा :** पं. सरदारमलजी जैन बेरसिया, 48.**शहडोल :** पं.सुशीलजी जैन भोपाल, 49.**नागदामण्डी :** पं. प्रमोदजी जैन सागर, 50.**मन्दसौर (कालाखेत) :** पं.शीतलजी पाण्डे उज्जैन, 51.**भोपाल (चौक) :** विदुषी समताजी झांझरी उज्जैन, 52. **इन्दौर (रामचन्द्रनगर) :** पं.अनेकान्तजी भारिल्ल मुम्बई, 53–54. **मन्दसौर (नरसिंगपुरा) :**पं.फूलचन्दजी मुक्किरवार एवं विदुषी मंजूषाजी मुक्किरवार हिंगोली, 55.**सागर (तारण–तरण) :** पं. पद्मचन्दजी सर्राफ आगरा, 56.**निसई :** कपूरचन्दजी समैया सागर, 57.**अकाझिरी :** पं. सुनीलजी जैन रामगढ़, 58. **बेगमगंज :** पं.नितुलजी जैन भिण्ड, 59.**रतलाम (स्टेशन) :** पं. शीतलजी हेरवाडे कोल्हापुर, 60. **महिदपुर :** पं. अमितजी शास्त्री गुना, 61.**जावरा :** पं.हीरालालजी गंगवाल, 62.**ग्वालियर (दानाओली) :** पं. सत्येन्द्रजी बीना, 63.**कालापीपल :** पं.महेन्द्रजी सेठी, 64. **टीकमगढ़ :** पं. अरुणकुमारजी जैन, 65. **अशोकनगर :** पं. अमोलकचन्दजी जैन, 66. **उज्जैन :** पं. बेलजीभाई शाह, 67.**कर्रापुर :** पं. धनप्रसादजी जैन, 68.**बण्डा :** पं. कपूरचन्दजी भाईजी, 69.**खनियांधाना :** पं. ताराचन्दजी जैन, 70.**रांझी (जबलपुर) :** पं.सुमितजी शास्त्री टीकमगढ़, 71.**घोडाडूंगरी :** पं. सुरेशचन्दजी जैन, 72–74. **भोपाल :** पं. अनुरागजी बडकुल, पं.राजमलजी पवैया एवं डॉ. महेन्द्रजी शास्त्री गुढा,75. **शाहगढ़ :** पं. चित्तरंजनजी छिन्दवाड़ा, 76. **इन्दौर (माणक चौक)**: पं.जिनेन्द्रजी नन्देश्वर नन्दगाँव, 77.**कटनी :** पं.संतोषजी जैन शास्त्री, 78.**ग्यारसपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री, 79.**लोहारदा :** पं. छगनलालजी जैन, 80.**सिवनी :** पं. कपूरचन्दजी भारिल्ल, 81–83.**ग्वालियर :** पं. धनेन्द्रजी सिंघल, पं. सुनीलजी जैन एवं पं.अजितजी जैन, 84.**खैरागढ़ :** पं. दुलीचन्दजी जैन, 85.**सिलवानी :** पं.संजयजी शास्त्री खनियांधाना, 86.**इन्दौर (देवास रोड) :** पं.राजेन्द्रजी बंसल अमलाई,

87.**पचमढ़ी :** पं.सोनलजी शास्त्री जबेरा, 88.**शाहपुर :** पं. निलेशजी जैन छिन्दवाड़ा, 89.**पथरिया :** पं. नेमीचन्दजी जैन, 90.**गुना (शांतिनाथ) :** पं.विनीतजी शास्त्री ग्वालियर, 91.**धामनोद :** पं.अर्पितजी शास्त्री बड़ामलहरा, 92.**रत्नौद :** पं. मयंकजी शास्त्री बांसवाड़ा, 93.**बड़गाँव :** पं. प्रमेशजी शास्त्री जबेरा, 94.**मौ :** पं.शुद्धात्मप्रकाशजी शास्त्री, 95.**करेरा :** पं. शाकुलजी शास्त्री मेरठ, 96. **सनावद :** पं.एलमचन्दजी शास्त्री गडखेडा, 97. **विजयपुर :** पं.संदीपजी शास्त्री भिटोनी, 98.**बनखेडी :** पं.अरहंतवीरजी शास्त्री फिरोजाबाद, 99. **बण्डा बेलई :** पं.प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर, 100.**फुटेराकलाँ :** पं.विनयजी शास्त्री बून्दी, 101. **जावरा :** पं.अभिषेकजी शास्त्री केलवाड़ा, 102.**कुचडौद :** पं. सौरभजी शास्त्री कर्रापुर, 103. **जावर :** पं.नितिनजी शास्त्री खडैरी, 104.**खरगौन :** पं.अंकितजी शास्त्री खनियांधाना, 105. **मालथौन :** पं.विवेकजी शास्त्री सागर, 106.**गढ़ाकोटा :** पं.वीरचन्दजी शास्त्री लांडनू, 107. **सुसनेर :** पं.निपुणजी शास्त्री टीकमगढ़, 108. **ऊन पावागिरि :** पं.अंकितजी शास्त्री कोलारस, 109. **पथरिया :** पं.शैलेन्द्रजी शास्त्री मूँगेर, 110. **मगरौन :** पं.सचिनजी शास्त्री जबेरा, 110. **बीड :** पं.धवलजी गांधी नातेपुते, 111. **भाटापारा :** पं.संतोषजी शास्त्री बक्स्वाहा, 112. **ब्रजपुर :** पं.सुधीरजी शास्त्री अमरमऊ,113.**ब्यावरा :** पं.सोमिलजी शास्त्री खनियांधाना, 114. **इन्दौर (साधनानगर) :** पं.जिनेन्द्रजी नन्देश्वर नन्दगाँव।

महाराष्ट्र प्रान्त - 1.**मुम्बई (बोरिवली) :** पं.रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 2.**मुम्बई (सीमन्धर) :** पं.अनिलजी शास्त्री भिण्ड, **मुम्बई (घाटकोपर) :** पं.कमलचन्दजी जैन पिड़ावा, 4.**मुम्बई (दादर) :** पं.राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, 5.**मुम्बई (भूलेश्वर) :** पं.संजयजी शास्त्री अलीगढ़, 6.**मुम्बई (मलाड) :** पं.सुशीलजी जैन राधौगढ़, 7.**मुम्बई (दहीसर) :** पं.मीठाभाईजी दोशी हिम्मतनगर, 8.**मुम्बई (भायन्दर–वेस्ट) :** पं.सुरेन्द्रकुमारजी जैन उज्जैन, 9.**मुम्बई (वसई) :** पं. ऋषभकुमारजी शाह अहमदाबाद, 10.**मुम्बई (जोगेश्वरी–ईस्ट) :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल मुम्बई, 11.**मुम्बई (अन्धेरी–ईस्ट) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया मुम्बई, 12.**मुम्बई (डोम्बिवली) :** पं.अशोकजी मांगुलकर राधौगढ़, 13.**नागपुर (इतवारी) :** पं. अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, 14.**देवलाली :** विदुषी पुष्पाबेनजी खण्डवा, 15–16.**गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं.धन्यकुमारजी बेलोकर एवं पं. मथुरालालजी जैन इन्दौर, 17.**जलगाँव:** पं.बाबूभाईजी फतेपुर, 18.**फलटण :** पं.कमलेशकुमारजी मौ, 19.**पुणे (स्वा. भवन) :** पं.मानमलजी जैन कोटा, 20.**रामटेक :** चन्दनमलजी शाह नातेपुते, 21.**पुणे (चिंचवड़) :** पं.नन्दकिशोरजी मांगुलकर, 22.**पंढरपुर:** पं.विनोदकुमारजी गुना, 23.**देवलगाँवराजा :** पं. केशवजी जैन नागपुर, 24.**चिखली** : विदुषी सुधाबहनजी छिन्दवाड़ा, 25. **कोल्हापुर :** पं.जितेन्द्रजी राठी जयपुर, 26.**यवतमाल :** पं. विजयजी राऊत रीठद, 27.**कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई, 28.**सेलू :** पं. सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, 29.**पुसद :** पं. सतीशजी बोरालकर डोणगाँव, 30.**मुम्बई (अणुशक्तिनगर) :** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर, 31.**औरंगाबाद :** पं.धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, 32.**जयसिंगपुर :** पं. विजयसेनजी पाटील आलते, 33.**कारंजा (लाड) :** पं. जीवराजजी जैन नासिक, 34.**शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले, 35.**मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री मुम्बई, 36.**मुम्बई :** पं.परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 37.**सोलापुर :** पं.प्रशांतजी मोहरे, 38–39.**सोलापुर (आदिनाथ मन्दिर) :** पं.विक्रान्तजी शाह एवं पं.विजयजी कालेगोरे, 40.**परभणी :** पं.महावीरजी मांगूलकर, 41.**हिंगणघाट :**

पं.श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 42.**नागपुर :** पं.मधुकरजी गडेकर, 43–44.**एलोरा:** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर एवं पं.प्रदीपजी माद्रप, 45. **सावदा :** पं.दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 46–48. **कारंजा (लाड) :** पं.धन्यकुमारजी भोरे, पं.आलोकजी शास्त्री एवं पं. परागजी महाजन , 49.**सेलू :** पं.अशोकजी वानरे, 50.**पुणे (जैन बोर्डिंग) :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, 51.**सांगली :** पं.महावीरजी पाटील, 52. **नागपुर (इतवारी) :** पं.प्रियंकजी शास्त्री रहली, 53–55.**देवलगांवराजा :** पं. विजयकुमारजी आह्वाने, पं.उमाकांतजी बंड एवं पं.सत्येन्द्रजी मिरकुटे पान्हकन्हेरगाँव, 56.**कन्नड :** पं.सचिनजी पाटनी, 57–60.**हिंगोली :** पं. पद्माकरजी दोडल, पं.अमोलजी संघई, पं. विशालजी कान्हेड एवं पं.संतोषजी सावजी अम्बड, 60. **गजपंथा :** पं. संतोषजी उखलकर, 61. **डासाला :** पं. आदेशजी बोरालकर सेनगाँव, 62. **अकोला :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, 63. **नातेपुते :** पं. शीतलचंदजी दोशी, 64. **कचनेर :** पं. संजयजी राऊत, 65. **पानकन्हेरगाँव :** पं. विजयजी बोरालकर वाघजाली, 66. **सोलापुर (बुवने मन्दिर) :** पं. सुनीलजी बेलोकर सुल्तानपुर, 67.**सोलापुर (कासार मन्दिर) :** पं.रवीन्द्रजी काले कारंजा, 68.**शिराढोण :** पं.प्रवीणजी पाटील हेरले, 69.**रिसोड :** पं.मुकुंदजी ढोके वसमतनगर, 70.**मुम्बई (दादर) :** पं.अतुलजी जैन बांसवाड़ा, 71.**पाथर्डी :** पं. विवेकजी सातपुते डोणगाँव, 72. **हेरले :** पं.जिनचन्दजी आलमान, 73–76.**कोल्हापुर क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर :** पं.अभिनन्दनजी पाटील, पं.भरतजी कोरी कागनरी, पं.रवीन्द्रजी आलमान एवं पं. भरतजी अलगोंडर बाहुबली, 77.**अक्कलकोट :** पं.रोहनजी रोटे,78.**साडवली :** पं. प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, 79.**माणकापुर :** पं.अविनाशजी पाटील शेडबाल, 80.**पुसद :** पं.सतीशजी बोरालकर डोणगाँव, 81.**रिसोड :** पं. मुकुंदजी ढोके वसमतनगर, 82.**नरन्दे :** पं.अभिजीतजी पाटील कोल्हापुर, 83.**वाशिम (चन्द्रप्रभ) :** पं.आकेशजी जैन छिन्दवाड़ा, 84.**साडवली :** पं. प्रसन्नजी शेटे कोल्हापुर, 85.**हिवरखेड :** पं.संदीपजी चौगुले व्हन्नूर, 86.**सेनगाँव :** पं.सूरजजी पाचोरे नान्द्रे, 87.**धामणगाँव बढे :** पं.महेश नेजे दत्तवाड़, 88.**माढ़ा:** पं.अमोलजी निर्वाणे बांसवाड़ा, 89.**मालशिरस :** पं.सनतजी खोत बांसवाड़ा, 90.**मालेगाँव :** पं.रवीन्द्रजी मसलकर अम्बड़, 91.**फालेगाँव :** पं.संदीपजी पाटील रांगोली, 92.**नेरपिंगलई :** पं.महेन्द्रजी मिरकुटे आसेगाँव, 93.**सदाशिवनगर :** पं.दीपकजी चौगुले बांसवाड़ा, 94.**डोणगाँव :** पं.पंकजजी दहातोंडे परली, 95.**कवठेसार :** पं.मिलिंदजी केटकाले कबनूर, 96.**वसगडे :** पं.अनिलजी आलमान हेरले, 97.**वलीवड़ी :** पं.उमेशजी घोसरवाडे अकिवाट, 98. **हुपरी :** पं.दीपकजी अथणे कोल्हापुर, 99.**जैनापुर :** पं.प्रशांतजी हिरेमठ शेडबाल, 100.**रूकडी :** पं.दीपकजी मजलेकर आलते।

गुजरात प्रान्त - 1.**बडोदरा :** पं.प्रकाशदादाजी झांझरी उज्जैन, 2.**हिम्मतनगर :** पं. अरहंतजी झांझरी उज्जैन, 3.**अहमदाबाद (पालडी) :** पं. अभयजी शास्त्री, खैरागढ़ 4.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं.मांगीलालजी जैन करावली, 5.**अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, 6.**अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, 7.**तलोद :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन, 8.**तलोद :** विदुषी पुष्पलताजी झांझरी उज्जैन, 9.**वापी :** पं. विपुलजी मोदी सागर, 10.**अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, 11.**रखियाल :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 12.**मोरबी :** पं. देवेन्द्रजी बण्ड नागपुर, 13.**जेतपुर :** पं. रीतेशजी शास्त्री अहमदाबाद,14.**पोरबन्दर :** पं. संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, 15. **अहमदाबाद (सरसपुर) :** पं. वरुणजी शास्त्री मुम्बई, 16. **अहमदाबाद (ओढव) :** पं. जितेन्द्रजी शास्त्री मुम्बई, 17–20. **सूरत :** पं. अरूणजी शास्त्री मौ, पं. नितिनजी शास्त्री भिण्ड, पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, पं. विकासजी शास्त्री खनियांधाना 21.**अहमदाबाद :** पं.नवीनजी जैन, 22–23. **नवसारी :** पं. चैतन्यजी सातपुते नासिक एवं पं. संतोषजी बोगार सोलापुर, 24. **राजकोट :** पं. सुनीलजी जैनापुरे, 25–27. **अहमदाबाद के उपनगरों में :** पं.तपिशजी जैन, पं.नवीनजी शास्त्री एवं पं. नितिनजी शास्त्री।

उत्तरप्रदेश प्रान्त - 1.**आगरा (नमकमंडी) :** पं.अजितजी मड़ावरा, 2.**ललितपुर :** पं. पद्मचन्दजी गंगवाल इन्दौर, 3. **मेरठ (तीरगरान) :** विदुषी ब्र. कल्पनाबेनजी सागर, 4. **शिकोहाबाद :** पं. रमेशजी 'मंगल' सोनगढ़ 5. **बांदा :** पं.देवेन्द्रजी सिंगोडी 6. **सहारनपुर :** पं. सुरेशजी 'इन्जि' सागर 7. **मुजफ्फरनगर :** पं. प्रद्युम्नजी जैन 8. **मैनपुरी :** पं. जगदिशसिंहजी पवांर उज्जैन, 9.**गुरसराय :** पं. रमेशचन्दजी जैन करहल, 10.**सुल्तानपुर :** पं. मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, 11.**डांडा–इटावा :** पं.अरूणजी जैन बानपुर, 12. **धामपुर :** पं. प्रदीपजी शास्त्री, 13. **कुरावली :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री भरतपुर, 14. **रूड़की :** पं. रीतेशजी शास्त्री सनावद, 15. **कानपुर (किदवईनगर) :** पं.आशीषजी शास्त्री भिण्ड, 16. **बरेली :** पं. विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, 17.**खतौली :** पं. सौरभजी शास्त्री फिरोजाबाद,18. **गंगेरू :** पं. विमलजी जैन जलेसर, 19. **फिरोजाबाद (जैन भवन) :** पं.पुष्पेन्द्रजी जैन बानपुर, 20. **मेरठ (शास्त्रीनगर) :** पं.विकासजी शास्त्री बानपुर, 21–22.**कानपुर (मुमुक्षु मं.) :** पं. अनिलजी 'धवल'भोपाल एवं पं.पुनीतजी मंगलायतन, 23. **बडौत :** पं.कमलकुमारजी मल्हैया जबेरा, 24. **बानपुर :** पं.मुरारीलालजी नरवर, 25. **रामपुर मणिहारन :** पं.प्रीतेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, 26.**जैतपुरकलाँ :** पं. अतुलजी शास्त्री ललितपुर, 27–28.**अलीगढ़ :** पं.सतीशजी शास्त्री मौ व पं.नितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, 29–30.**खतौली :** पं.सोनूजी शास्त्री एवं पं.कल्पेंद्रजी जैन, 31. **सुलतानपुर :** पं. देवचन्दजी जैन, 32. **शामली :** पं.सलेकचन्दजी जैन, 33. **कानपुर (का. नगर) :** पं.अंकुरजी शास्त्री देहगाँव, 34. **करहल :** पं.राहुलजी शास्त्री अलवर, 35–36. **कैराना :** पं. विवेकजी शास्त्री पिड़ावा व पं. रवीन्द्रजी महाजन परभणी, 37.**कर्राचितपुर :** पं.अभिलाषजी शास्त्री कोटा, 38. **सहारनपुर (विधान) :** पं.अंकितजी लूणदा।

राजस्थान प्रान्त - 1.**उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पं. देवेन्द्रजी जैन बिजौलियाँ, 2. **उदयपुर (केशवनगर) :** पं. कोमलचन्दजी जैन टड़ा, 3.**भीण्डर :** पं. जयकुमारजी जैन बांरा, 4.**अजमेर :** डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर, 6.**पिडावा :** पं.सुरेशजी जैन टीकमगढ़, 7.**कोटा (मुमुक्षु मं.) :** पं. मनीषजी शास्त्री रहली, 8.**बांसवाड़ा :** पं. नागेशजी जैन पिड़ावा, 9.**किशनगढ :** पं.अरविन्दजी शास्त्री सुजानगढ़, 10.**कोटा (इन्द्रविहार) :** पं.मनोजजी जैन करेली, 11.**भीलवाडा :** पं.गुलाबचन्दजी बीना, 12.**बिजौलियाँ :** पं.महेन्द्रजी सागर, 13.**पीसांगन :** पं.मधुकरजी जलगाँव, 14.**चित्तौडगढ़ :** पं.विमलचंदजी लाखेरी, 15.**प्रतापगढ़ :** पं. चन्दुलालजी जैन कुशलगढ़, 16.**अलीगढ़ :** विदुषी ब्र. विमलाबेनजी जयपुर, 17.**निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी नाके, 18.**उदयपुर (प्रभातनगर) :** पं.वीरेन्द्रजी 'वीर' फिरोजाबाद, 19.**उदयपुर (से.11) :** पं.खेमचन्दजी शास्त्री उदयपुर, 20.**बनियानी :** पं.धरमचन्दजी जैन जयथल, 21.**कुशलगढ़ (तेरापंथी) :** पं.अशोकजी जैन उज्जैन, 22.**अजमेर :** पं.सुनीलजी धवल भोपाल, 23.**लूणदा :** पं.ज्ञानचन्दजी जैन झालावाड़, 24.**डूंगरपुर (पत्रकार कालोनी) :** पं.लखमीचंदजी जैन,

25.**प्रतापगढ़ :** पं. चन्दूलालजी जैन कुशलगढ़, 26.**बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, 27.**करावली :** पं.भंवरलालजी जैन कोटा, 28–30.**अलवर :** पं.कांतिकुमारजी नरसिंगपुरा इन्दौर, पं.प्रेमचंदजी जैन एवं पं.अजीतजी शास्त्री, 31.**देवली :** पं.वीरेन्द्रजी शास्त्री विराटनगर, 32–33.**प्रतापगढ़ :** पं.सज्जनलालजी सांवरिया एवं पं. सुनीलजी शास्त्री, 34.**रूपाहेडीकलां :** पं.पद्माकरजी मंजूले, 35.**बस्सी :** पं.कृष्णचन्दजी शास्त्री भिण्ड, 36.**बांरा :** पं.संजीवजी शास्त्री, 37.**शाहबाद :** पं.भगवतीप्रसादजी शास्त्री, 38.**टामटिया :** पं. प्रमोदजी जैन, 39.**महावीरजी :** पं.नेमीचन्दजी जैन, 40.**नौगामा :** पं.शीतलजी शास्त्री, 41–42.**कुचामनसिटी :** पं.राजेशजी शास्त्री गुढा एवं पं.संदीपजी शास्त्री विनौता, 43.**सरदारशहर :** पं. मनीषजी 'कहान' खडैरी 44.**डूँगरपुर :** पं.श्रीपालजी जैन घाटोल, 45.**बून्दी (मु. मण्डल) :** पं.संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, 46.**वल्लभनगर :** पं.मीठालालजी भगनोत उदयपुर, 47.**निवाई :** पं.राजीवजी शास्त्री अलवर, 48.**उदयपुर (गायरियावास) :** पं.अनुजजी शास्त्री जयपुर, 49.**जुरहरा :** पं. नेमीचन्दजी शास्त्री महावीरजी, 50.**लाम्बाखोह :** पं. प्रक्षालजी शास्त्री उदयपुर, 51.**उदयपुर (नेमीनाथ कॉ.) :** पं.अभिषेकजी शास्त्री सिलवानी, 52.**कुरावड़ :** पं.नयनजी शाह हैदराबाद, 53.**रावतभाटा :** पं.अभयजी शास्त्री खडैरी, 54–55. **बांसवाड़ा :** पं. गणतंत्रजी शास्त्री खरगापुर एवं पं.आकाशजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, 56.**कुशलगढ़ (शांतिनाथ) :** पं.सचिनजी जैन जबेरा, 57.**भैसरोडगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री, 58. **बून्दी (नैनवाँ रोड) :** पं.चैतन्यप्रकाशजी शास्त्री बक्स्वाहा, 59. **वैर :** पं. प्रदीपजी शास्त्री पथरिया, 60. **सेमारी :** पं.संजयजी शास्त्री लोहारिया, 61.**कानोड :** पं.तन्मयजी शास्त्री खनियांधाना, 62. **बीकानेर :** पं.अभिनवजी मोदी मैनपुरी, 63.**तालेडा :** पं.विनोदजी जैन बांसवाड़ा, 64. **जयथल :** पं. अचलजी शास्त्री खनियांधाना, 65. **कूँण :** पं.अभिषेकजी शास्त्री दिग्सर, 66. **टोकर :** पं.नितिनजी शास्त्री सेमारी, 67. **डबोक :** पं. सुरेशजी शास्त्री तिरूमल्लै, 68. **छबड़ा :** पं. संतोषजी शास्त्री तिरूमल्लै, 69. **पीसांगन (विधान) :** पं.शशांकजी शास्त्री सागर, 70. **जौलाना :** पं. सी. बाबू शास्त्री नल्लूर, 71. **बोहेडा :** पं.अमितजी जैन बांसवाड़ा, 72. **पीठ :** पं.धीरजजी शास्त्री जबेरा, 73. **अलवर (विधान) :** पं. सचिनजी शास्त्री भरड़ा।

अन्य प्रान्त – 1.**भागलपुर :** पं. रतनचन्दजी चौधरी कोटा, 2.**कोलकाता (खडगपुर) :** पं. अशोकजी शास्त्री रायपुर, 3.**पोन्नूरधाम :** पं.बाँकेबिहारीजी शास्त्री चेन्नई, 4.**कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** पं.अभिनवजी शास्त्री जबलपुर, 5.**कोयम्बटूर :** पं.अखिलेशजी शास्त्री बरां, 6.**हिसार :** पं.अभिषेकजी शास्त्री रहली, 7.**रानीपुर :** पं. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर, 8.**कोलकाता (बाली) :** पं.संभवजी शास्त्री नैनधरा, 9.**एर्नाकुलम :** पं.समकितजी शास्त्री सिलवानी, 10.**लुधियाना :** पं. सुदीपजी शास्त्री बरगी, 11–12.**बिनौली :** पं.निखिलजी शास्त्री कोतमा एवं पं. राजकुमारजी बरगी, 13.**कोलकाता (बेलदा) :** पं. स्वतंत्रजी शास्त्री खरगापुर, 14.**बिजनौर :** पं. सौरभजी शास्त्री गढ़ाकोटा, 15.**कनकगिरि :** पं. नाभिराजनजी शास्त्री, 16.**श्रवणबेलगोला :** पं. शान्तिसागरजी शास्त्री, 17.**चम्पापुर :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा, 18.**हुबली :** पं. रमेशजी शिरहट्टी बाबानगर, 19.**सत्तूर (धारवाड़) :** पं. अभिजीतजी अलगौंडर, 20.**बैंगलोर :** विदुषी कु. परिणति पाटील जयपुर, 21.**चिक्कोडी :** पं. संयमजी शेटे कोल्हापुर, 22.**गोहाना :** पं. राहुलजी शास्त्री विनौता, 23.**गोहाना :** पं. आशीषजी शास्त्री मौ, 24.**खेकडा**

: पं. सन्मतिजी मोदी सागर, 25.**गुडगाँव (झारसा) :** पं.पंकजजी शास्त्री खडैरी, 26.**वल्लभगढ़ :** पं.राजेशजी शास्त्री शिवपुरी, 27.**सरिया :** पं.सौरभजी शास्त्री शाहगढ़, 28.**पेटरवार :** पं.किशोरजी धोंगडे रहाटगाँव, 29. **शिमोगा :** पं.अनन्तराजजी जैन मण्डया, 30. **साम्बड :** पं.प्रशांतजी उखलकर गोवर्धन।

दिल्ली प्रान्त – 1–4. **आत्मसाधना केन्द्र :** पं. कस्तुरचन्दजी बजाज विदिशा, पं. कैलाशचंदजी जैन मोमासर, पं.अमितजी शास्त्री लुकवासा एवं पं.निकलंकजी शास्त्री कोटा, 5.**शाहदरा (शिवाजी पार्क) :** पं.तेजकुमारजी गंगवाल इन्दौर, 6.**जनकपुरी (सी) :** पं.सौरवजी शास्त्री चन्देरी, 7.**जनकपुरी (बी) :** पं.गौरवजी शास्त्री चन्देरी, 8.**प्रशान्तविहार :** पं.पूरणचन्दजी सोनागिर, 9.**बाली :** पं.कस्तुरचन्दजी भोपाल, 10.**महाविदेह क्षेत्र (घेवरा) :** पं. राकेशजी शास्त्री दिल्ली, 11.**पालमगाँव :** पं.नितिनजी जैन नांगलराया, 12.**दिल्ली केन्ट :** पं.आशीषजी शास्त्री जबेरा 13.**द्वारका (से.11) :** पं.पदमचन्दजी कोटा, 14.**राजेन्द्रनगर (ओल्ड) :** पं.राजेन्द्रजी जैन टीकमगढ़, 15.**केशवपुरम् :** पं. सुशीलजी शास्त्री फुटेरा, 16.**शक्तिनगर :** पं.संजीवजी शास्त्री उस्मानपुर, 17.**आर्यपुरी (सब्जीमण्डी) :** पं. स्वतंत्रजी शास्त्री फुटेरा, 18.**आर्यपुरी (सब्जीमण्डी) :** पं. अमितजी शास्त्री फुटेरा, 19.**सीताराम बाजार :** पं.अनिलजी मंगलायतन, 20.**इन्द्रपुरी :** पं.अमितजी शास्त्री फुटेरा, 21.**मण्टोला (पहाडगंज) :** पं. संदीपजी शास्त्री गोहद, 22.**वेदवाड़ा (चांदनी चौक) :** पं.अविरलजी शास्त्री विदिशा, 23.**मोरी गेट :** पं.प्रशान्तजी शास्त्री मौ, 24.**पटपड़गंज** : पं.नीरजजी शास्त्री खडैरी, 25. **लक्ष्मीनगर :** पं.सत्येन्द्रमोहनजी दिल्ली, 26.**बैंक एन्क्लेव :** पं. संदीपजी शास्त्री बांसवाड़ा, 27.**छोटा बाजार (शाहदरा) :** पं.अशोकजी गोयल दिल्ली, 28.**ऋषभविहार :** पं.अशोकजी गोयल दिल्ली, 29.**बाहुबली एन्क्लेव :** पं. ऋषभजी शास्त्री उस्मानपुर, 30.**सरस्वती विहार :** पं.अरविन्दजी शास्त्री टीकमगढ़, 31.**सैनिक फार्म :** पं.राकेशजी शास्त्री दिल्ली, 32.**गोविन्दपुरी (जवाहरनगर) :** पं. आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, 33.**प्रल्हादपुर :** मनीषजी सिद्धान्त खडैरी 34.**वसन्तकुंज:** डॉ. वीरसागरजी दिल्ली,35. **मयूर विहार :** पं. चैतन्यजी शास्त्री कोटा, 36. **राजा बाजार :** पं. श्रेयांसजी शास्त्री अभाना, 37 **विकासपुरी :** पं. नितीनजी शास्त्री विदिशा, 38.**अशोका एन्क्लेव :** पं.अश्विनजी नानावटी नौगामा **उक्त विद्वानों के अतिरिक्त दिल्ली में जिनका स्थान सुनिश्चित होना बाकी है, वे विद्वान** 38. पं.निखिलजी शास्त्री बण्डा, 39. पं.पंकजजी शास्त्री बण्डा, 40. पं.अनुभवजी जैन मौ, 41. पं.पवनजी जैन मौ, 42. पं.आशीषजी शास्त्री विदिशा।

जयपुर– 1. डॉ. श्रीयांसकुमारजी सिंघई, 2. डॉ. नरेन्द्रकुमारजी जैन, 3. पं.शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 4.पं.संतोषजी झांझरी, 5.पं.राजेशजी शास्त्री शाहगढ़, 6.पं.विनयजी पापड़ीवाल, 7.पं.पीयूषकुमारजी शास्त्री, 8.डॉ. प्रभाकरजी सेठी, 9.पं.चिरंजीलालजी जैन, 10.पं.रमेशचन्दजी जैन लवाण, 11.पं.संजयजी शास्त्री बड़ामलहरा, 12.पं.दिनेशजी शास्त्री बड़ामलहरा, 13.पं.गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, 14.पं.परेशजी शास्त्री घाटोल, 15.पं.प्रभातजी शास्त्री टीकमगढ़, 16.पं.देवेन्द्रजी शास्त्री अकाझिरी, 17.पं. अनन्तवीरजी जैन फिरोजाबाद, 18.पं.विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन,19.विदुषी प्रेमलताजी जैन, 20.विदुषी प्रभाजी जैन, 21.पं.संजीवजी शास्त्री खडैरी, 22.पं. अनिलजी शास्त्री खनियांधाना, 23.पं.पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 24. पं.सचिन्द्रजी शास्त्री गढाकोटा का विभिन्न उपनगरों में लाभ मिलेगा।

(पृष्ठ–22 का शेष ...)

महा महोत्सव के गौरवशाली पात्रों में **महाराजा सिद्धार्थ एवं महारानी त्रिशला** बनने का सौभाग्य श्री नवनीत–सूर्यकलाबेन शाह को मिला।

सौधर्म इन्द्र–इन्द्राणी श्री संदीप–स्मिता शाह, **कुबेर–कुबेरानी** श्री दिलीप–के.डी.शाह, **ईशान इन्द्र–इन्द्राणी** श्री सोभाग–लीला बेन शाह, **सानत इन्द्र–इन्द्राणी** श्री दीपक–दीप्ति शाह, **माहेन्द्र इन्द्र–इन्द्राणी** श्री भीमजी–पुष्पाबेन शाह, **यज्ञनायक** श्री महेन्द्रमेघजी–सूर्यकला शाह तथा **महामंत्री** श्री लक्ष्मीचंद–सूर्यकला बेन शाह थे।

महोत्सव में ध्वजारोहण श्री हंसराज देवराज शाह ने तथा जिनमंदिर का उद्घाटन श्री महेन्द्र–शशी शाह परिवार ने किया। मूलनायक प्रतिमा विराजमानकर्त्ता श्री भगवानजी कचराभाई शाह परिवार, विधिनायक विराजमानकर्त्ता श्री शांतिलाल वीरजी शाह परिवार एवं भगवान पार्श्वनाथ प्रतिमा विराजमानकर्त्ता श्री दिनेश शाह परिवार थे। जन्म कल्याणक के दिन प्रथम पालना–झूलन का सौभाग्य श्री प्रफुल्ल डी. राजा परिवार को मिला।

महोत्सव समिति के अध्यक्ष डॉ. दिनकर एम. शाह तथा मंत्री श्रीमती शीतलबेन बी.शाह के साथ–साथ दि.जैन एसोसिएशन के अध्यक्ष श्री भीमजीभाई शाह और उनका पूरा परिवार पंचकल्याणक महोत्सव में नीव के पत्थर के समान कार्यरत थे; जिनमें कमल, विजेन, हेमल, मिलन, दीपक, मनीष आदि प्रमुख थे। यातायात व्यवस्था की पूरी जिम्मेवारी श्री जयन्तीभाई गुटका संभाल रहे थे। ●

जयपुर शिविर 28 सितम्बर से 7 अक्टू. 06 तक

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा आयोजित प्रतिवर्ष दशहरे के अवसर पर लगनेवाले शिविर की तिथि इसवर्ष **गुरुवार, दिनांक 28 सितम्बर से शनिवार, 7 अक्टूबर 06** तक लगना निश्चित की गई है।

शिविर के अवसर पर अध्यात्मजगत के देश–विदेश में ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से धर्मलाभ मिलेगा।

साथ ही बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल', डॉ. उत्तमचन्दजी सिवनी, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सुदीपजी जैन बीना, पण्डित सुदर्शनजी बीना, पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद आदि से भी सम्पर्क किया जा रहा है। व्याख्यानमाला के माध्यम से अन्य अनेक विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

सम्पूर्ण कार्यक्रम ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद एवं पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

अत: समस्त साधर्मी भाई बहिनों को **तिथि का ध्यान रखते हुये** शिक्षण शिविर में पधारने का भावभीना आमंत्रण है।